विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय (सी० सी० ए०)दिनांक 26-02-2021

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित।

माघ मास पूर्णिमा के शुभ अवसर पर रैदास की कथन ।

‘मन चंगा तो कठौती में गंगा...’ संत कवि रैदास की गंगा भक्ति को समझने के लिए उनकी कही यह सूक्ति ही पर्याप्त है। बनारस के निकट के गांव में जन्मे संत रैदास की गंगा-भक्ति को लेकर जनमानस में अनेक कथाएं प्रचलित हैं।

दुनिया भर के संत-महात्माओं में संत रैदास को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। उनके भक्त रैदासी कहलाते हैं। माघ पूर्णिमा को बनारस के निकट एक गांव में अवतरित संत रैदास बाल काल से ही भक्ति भाव में लीन रहते थे। अत: पिता ने उन्हें घर से निकाल दिया। उन्होंने गंगा किनारे कुटिया में शरण ली, जहां उन्हें भगवत ज्ञान की प्राप्ति हुई। सद्गुरु रामानंद के बारह शिष्यों में से एक रैदास के जीवन में गंगा से जुड़े न जाने कितने ही आख्यान हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि रैदास के जीवन निर्माण, काव्य सृजन और धर्म-कर्म में गंगा का अप्रतिम महत्व रहा।

यह तब की बात है, जब रैदास प्रभु भजन में लीन रहते और अपनी आजीविका निभाते। एक बार उसी समय राजपुरोहित यज्ञ-भस्म लेकर गंगा जी में प्रवाहित करने के लिए जा रहे थे, तो नगर के लोगों ने अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार उन्हें कुछ-कुछ भेंट सौंपी, ताकि उन्हें भी गंगा में अर्पित किया जा सके। रैदास तो ठहरे प्रभु के भक्त, वे उन्हें तांबे का एक सिक्का ही दे सके। राजपुरोहित को पूजा-पाठ के बाद याद आया कि तांबे का पैसा तो अर्पित किया ही नहीं। उन्होंने जैसे ही रैदास जी का पैसा गंगा में डाला, एक अमूल्य रत्न बाहर निकला। यह रैदास की पवित्र आत्मा का प्रतिफल था। पर पुरस्कार पाने की आशा में राजपुरोहित ने इसे राजा को दे दिया। राजा देखते ही अति प्रसन्न हुए और राजपुरोहित से इसका जोड़ा लाने को कहा। राजपुरोहित पहले तो झूठ बोल रहे थे, पर स्थिति को देखते हुए राजा को राजपुरोहित ने सारी बातें सच बता दी कि गंगा मैया का यह प्रसाद रैदास के तांबे के सिक्के के बदले में मिला है। राजा-रानी संत रैदास की कुटिया पर पहुंचे। सभी बातों को जान कर संत रैदास ने कहा,'मां गंगे के दरबार में कोई काम असंभव नहीं। उन्होंने पास में रखी कठौती में मां गंगा का आह्वान किया और मां गंगा रत्न के साथ कठौती में आ गईं। गंगा का अवतरण और भक्त रैदास की भक्ति देख कर राजा-रानी भी उनके चरणों में गिर कर अपने स्वार्थ का प्रायश्चित करने लगे।

कहते हैं कि अपनी शिष्या मीराबाई के आमंत्रण पर संत रैदास चित्तौड़गढ़ आ गए थे, लेकिन गंगा-प्रेम उनके हृदय से तनिक भी कम नहीं हुआ।

यहीं पर 120 वर्ष की आयु में उन्हें निर्वाण मिला। भारतीय सांस्कृतिक जगत में संत रैदास की गंगा भक्ति इतिहास प्रसिद्ध है।